प्रतिवेदन के स्वर

श्री शम्भूश्याम सक्सेना



नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

प्रकाशक :
नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

प्रथम मुद्रण
सन् १९६४

मूल्य
चार रुपया

आवरण शिल्पी
लालाराम गोस्वामी

मुद्रक :
एजूकेशनल प्रेस
बीकानेर

आमुख

'प्रतिवेशन के स्वर' में इस युग की रचनाएं हैं,— यह युग जो गत महायुद्ध के बाद से आरंभ होता है। इसमें जीवन के मूल्य बड़ी तेजी से बदले हैं। मनुष्य और उसके रहन सहन, राज्य और समाज की विधि व्यवस्थाओं, में जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना शायद ही कभी आया हो। आकाश की उल्काओं की तरह क्षणक्षण में सत्ताधरों का प्रकाश जलता बुझता रहा है। कला और साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब झलकना स्वाभाविक है। नई विधाओं ने उसी त्वरा के साथ साहित्य और कला में प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन ने नूतन के लिए मार्ग छोड़ा है और जाते जाते उसे अपना आशीर्वाद दिया है और साथ ही यह संकेत भी करता गया है कि वह अपने पीछे आनेवाले नये युगों की धारणाओं के प्रति वैसा ही उदार बना रहे। मोह-ममत्व के बंधन में अपने आपको बंधने न दे। निर्लिप्त भाव से आगत का स्वागत करने के लिए तत्परता दिखाये।

युगधम के प्रति सचेष्ट पाठक पूर्व तैयारी के बिना भी सहज भाव से इस संदेश को आत्मसात कर सके हैं। परंपराओं के मोहजाल ने उन्हें विभ्रमित नहीं किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रखर वेग उमड़ा है कण कण जैसे उसी की राह देख रहा था। कुछ भी अप्रत्याशित नहीं। कुछ भी अपूर्व नहीं। नियति नियामक के रथ-चक्र की धाराओं के साथ घूमता हुआ वह उसी समय और उसी रूप में आया जैसा उसके लिए सृष्टिविधान था। इस युग का काव्य वस्तुवस्तु, वर्णन और छन्द सभी ओर से निबन्ध

आमुख

'प्रतिवेदन के स्वर' में इस युग की रचनाएं हैं,— यह युग जो गत महायुद्ध के बाद से प्रारंभ होता है। इसमें जीवन के मूल्य बड़ी तेजी से बदले हैं। मनुष्य और उसके रहन सहन, राज्य और समाज की विधि व्यवस्थाओं, में जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना शायद ही कभी आया हो। आकाश की उल्काओं की तरह क्षणक्षण में सत्ताधरों का प्रकाश जलता बुझता रहा है। कला और साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब झलकना स्वाभाविक है। नई विधाओं ने उसी त्वरा के साथ साहित्य और कला में प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन ने नूतन के लिए भाग छोड़ा है और जाते जाते उसे अपना आशीर्वाद दिया है और साथ ही यह संकेत भी करता गया है कि वह अपने पीछे आनेवाले नये युगों की धारणाओं के प्रति वैसा ही उदार बना रहे। मोह-ममत्व के बंधन में अपने आपको बंधने न दे। निर्लिप्त भाव से आगत का स्वागत करने के लिए तत्परता दिखाये।

युगधम के प्रति सचेष्ट पाठक पूर्व तैयारी के बिना भी सहज भाव से इस संदेश को आत्मसात कर सके हैं। परंपराओं के मोहपाश ने उन्हें विभ्रमित नहीं किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रखर वेग उमड़ा है क्षण क्षण जैसे उसी की राह देख रहा था। कुछ भी असंभावित नहीं। कुछ भी अपूर्व नहीं। नियति नियामक के रथ चक्र की आराओं के साथ घूमता हुआ वह उसी समय और उसी रूप में आया जैसा उसके लिए सुनिश्चित विधान था। इस युग का काव्य वस्तु, वर्णन और छन्द सभी ओर से निर्बन्ध

प्रकाशक :
नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

प्रथम मुद्रण
सन् १९५४

मूल्य :
चार रुपया

आवरण शिल्पी
गंगाराम गोस्वामी

मुद्रक :
एजूकेशनल प्रेस
बीकानेर

आमुख

'प्रतिवेदन के स्वर' में इस युग की रचनाएं हैं,— यह युग दो गत महायुद्धों के बाद से प्रारंभ होता है। इसमें जीवन के मूल्य, बड़ी तेजी से बदले हैं। मनुष्य और उसके रहन सहन, राज्य और समाज की विधि व्यवस्थाओं, में जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना शायद ही कभी आया हो। आकाश की उल्काओं की तरह क्षणक्षण में सत्ताधरों का प्रभाव बनता बुझता रहा है। कला और साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब अवश्य स्वाभाविक है। नई विधाओं ने बड़ी त्वरा के साथ साहित्य और कला में प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन ने नूतन के लिए घर छोड़ा है और जाते जाते उसे अपना आशीर्वाद दिया है और साथ ही शु शंकित भी करता गया है कि वह अपने पीछे आनेवाले नये युगों की धारणाओं के प्रति वैसा ही उदार बना रहे। मोह-ममत्व के बंधन में उसे आपको बंधने न दे। निर्लिप्त भाव से आगत का स्वागत करने में तत्परता दिखाये।

युगधर्म के प्रति सचेष्ट पाठक पूर्व तैयारी के बिना ही ... से इस संदेश को आत्मसात कर सके हैं। परंपराओं के मोह ने विभ्रमित नहीं किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रखर वेग रहा ... जैसे उसी की राह देख रहा था। कुछ भी अप्रत्याशित नहीं। ... नहीं नियति-नियामक के रथ चक्र की धाराओं के साथ ... उसी समय और उसी रूप में आया जैसा उसके लिए सुनिश्चित था। इस युग का काव्य वस्तु, वर्णन और छन्द सभी के ...

होकर आगे बढ़ा है तो भी किसी को शिकायत नहीं हुई है। कवि का प्रतिवेदन जीवन का प्रतिवेदन है युग का प्रतिवेदन है। उसे वाणी देने मात्र का काम उसका है जो उसने यदि पूरी ईमानदारी से किया है, उसे रहस्य में खो जाने नहीं दिया है तो उसने कर्तव्य का निर्वाह करने में कोई कसर नहीं रखी है। अब उसे सुनना और समझना लोकजीवन का काम है।

बीकानेर
१७ मार्च १९६४

शम्भूदयाल सक्सेना


प्रतिवेदन के स्वर

अनुक्रम

प्रतिवेदन के स्वर

मूल्यांकन

जीवन की रंगीनियाँ
सांस्कृतिक कार्यक्रमों के
रंगारंग विधान में
प्रस्तुत करती हैं
रीतिकालीन कवियों की
रूपजीवी मनोवृत्तियाँ
केवल उस झीने पर्दे को हटाकर
जो राधाकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रति भक्तिभावना का
आडंबर बनाये थी।

रामनामी दुपट्टे के भीतर
घूँघट में,
वो कजरारे बाँके नयन
उसी पुरानी शराब को
नई बोतलों में
नये लेबिलों के साथ पेश करते हैं।
यह एक विडंबना है
कि हम उसकी निन्दा करते हैं
और इसे तलछट तक उतारने के लिए
जिहाद के नारे लगाते हैं।

मूल्यांकन

जीवन की रंगीनियां
सांस्कृतिक कार्यक्रमों के
रंगारंग विधान में
प्रस्तुत करती हैं
रीतिकालीन कवियों की
कलाजीवी मनोवृत्तियां
केवल उस झीने पर्दे को हटाकर
जो राधाकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रति भक्तिभावना का
आडंबर बनाये थीं।

रामनामी दुपट्टे के भीतर
घूंघट में,
जो कजरारे बांके नयन
उसी पुरानी शराब को
नई बोतलों में
नये लेबिलों के साथ पेश करते हैं।
यह एक विडंबना है
कि हम उसकी निन्दा करते हैं
और इसे सबके गले उतारने के लिए
जिहाद के नारे लगाते हैं।

अंतिरेक के स्वर]

जीवन की गहराइयाँ,
अब भी
उतनी ही रहस्यमय हैं
जितनी चिन्तनशील उपनिषद्कार महर्षियों के समय थीं !
कार्ल मार्क्स, बेचारा,
उन गहराइयों में झांकने से
डरता ही रहा, डरता ही रहा
मानव हाड़ मांस का पुतला
एक अद्भुत त्रिकोण है !
अध्यात्म,
इतिहास और
अवर प्रवृत्तियों के कोणों में
कोई समकोण नहीं।



अन्तरिक्ष यात्रा

युग युगों से मानव मन में
पल रही थी आकांक्षा बड़ी
अन्तरिक्ष के सीमाहीन नीलोदधि में
कौन कौन से रहस्य छिपे हैं इस सृष्टि के ?

पक्षियों व पंखों की कल्पना पर
जीवन के प्रथम प्रभात से
मन-मयूर भरता रहा उड़ानें
अहरह ।
अन्तरिक्ष-यात्रों की कथाओं का जन्म
कला और साहित्य में
दुनिया की सभी जातियों में
सभी देशों में
पहले दिन से ही हुआ था ।

सभ्यता की प्रगति के इतिहास के
हर पृष्ठ पर
यह अदम्य आकांक्षा
सजीव बनी रही ।
प्रयत्नों से न मानी हार,
लगा रहा अनवरत
अन्तरिक्ष भेदन में

प्रतिवेदन के द्वार]

मानव
नित्य मिलता रहा
निर्मल उसे समस्त नीलाकाश से ।
धरती पर डोलता भी,
काम व्यस्तता के बीच
बिना पंखों का प्राणी
भावुक हृदय से विचरता कहीं और रहा ।

जीवन और मरण की समस्याएं
मरणोत्तर दुनिया की गुत्थियां
उलझीं परन्तु सुलझीं नहीं
काल के विशाल पट पर
गहरी खुदी हैं ये रेखाएं
चिन्ता की सलवटें
भाल पर उभर उभर
कहती कहानी उस जीवन की
जिसमें
राख में ज्यों स्फुलिंग
दबा दबा रहता सजीव ।

अन्ततः असंभव विचार हुआ सम्भव
अधीर बना धीर
जगा मानव मन में ।
खुल गये कपाट उस अगम्य अन्तरिक्ष के;
महती संभावनाओं की झांकी के साथ
एक अद्भुत दुर्दम भाव
आसमानी आवरण में

[अभिवेदन के स्वर

जीवन की नई कथा
नई व्यथा
नये उपाख्यान
नये अध्याय,
लेकर हुआ प्रस्तुत दीपित क्षितिज पर।

गागारिन, शेपर्ड ग्रिसम हैं,
तीतोव हैं
प्राणों की बाजी पर
अज्ञेय अन्तरिक्ष में प्रवेश कर
मानव की विजय के सुनहरे लेख
शून्य अवकाश को
आकारहीन क्षितियों पर
मानवता की अमिट स्याही से
लिखकर समारंभ किया महान।

अन्य अन्तरिक्ष
स्वप्न लोक
निस्सीम विस्तार
निर्जन प्रशान्त जीवधारियों को अनायास।
अनादि की अनन्त सृष्टि
मुक्त द्वार
केवल समय की बात शेष
जब जीवन धरित्री का
यहाँ नक्षत्रों में उपनिवेश
बसायें नई नई।

अन्तरिक्ष यात्रा में
जाति धर्म राष्ट्रवाद के
मील के पत्थर
काम नहीं देंगे।
नये मानदंडों की होगी सृष्टि
नया समाजवाद उस विस्तृत जगत् में
एक नीहारिका बना घूमता रहेगा
भविष्य के मनोमंडल में
अब सहस्र युगों पर्यन्त
एक नूतन प्रकम्पनीय संस्था का
होने को है जन्म शीघ्र।

अन्तरिक्ष यात्रियो
परम्परागत विश्व की भावनाओं में
क्या तब तुम्हें स्वाद आयेगा ?
अजाने अबूझे जीवन संघर्ष से
क्या बनेगा क्या बिगड़ेगा ?
इसको सोचना भी क्या तुम्हारे लिए सम्भव होगा ?
महामहिम तुम कितने
अतीत के रहोगे, कितने भविष्यत् के ?
कैसा वह वर्तमान होगा
कभी सोचा है तुमने ?



स्तालिन एक अभिव्यक्ति

लौहपुरुष स्तालिन
युग सृष्टा सोवियत संघ के शिल्पि प्रवर ।
लेनिन के साथी सहकर्मी
मार्क्सवाद के स्तम्भ सुदृढ़
आदेश और इंगित जिनके थे
स्वतःसिद्ध प्रमाण
पर्याप्त तर्क
खंडन मंडन से परे
अप्रतिहत दीप्ति विभु व्यक्तित्व ।

उठी जो उंगली कटकर गिरी
आंख फूटी
सिर उतर गया तत्काल
टूट गये षड्यन्त्र विफल
दर्प विगलित
विध्वस्त विदीर्ण
दमन का अभिनव चक्र
चला, शमन हो गये
विरोधी तत्त्व,
कुंठा,
फांसी,
नकली वस्तु,
प्रतिवेदन के स्वर]

पंचमांगी,
समाजी,
पूंजीवाद परक
व्यक्तिवादी
दक्षिण पंथी
नाना रूपों नामों के सम्प्रभु
केवल तुम्हीं से राष्ट्र
वामपक्षी
युगारम्भ विनोबीय से हाथ मात भ्रष्ट पुरुष ।
तुम्हारी कृपा कोर से
संयमशील नर पुण्डों के मानस में
प्रमाणित कॉमरेडों को भी मिला स्थान
विद्रोही किसानों,
असन्तुष्ट श्रमिकों,
स्वाधीनचेता बुद्धिवादियों
आलोचक वैज्ञानिकों,
विदेशों में प्रशंसित कलाकारों,
संदेहशील लेखकों
अध्यापकों छात्रों के दुर्भाग्य के साथ !

ऐसे अद्भुत महात्म्य के दुर्दान्त
होता के रूप में अमर महान स्तालिन !
आज तुम्हारे क्रूर फौलादी व्यक्तित्व के प्रति
जगती है सहानुभूति
करुणा विगलित मानव हृदय में ।
जब तुम्हारा शव
ढँकता है उसी साम्य डोर में
जिसमें लाख लाख लोग

तुम्हारे क्रूर इंगित पर
बांध कर झुका दिये गये थे
क्रेमलिन के पीछे
इतिहास के अंधेरे गर्त में।

सोवियत संघ से तुम्हारी
लाखों लाख मूर्तियां
जब तोड़ी और हटाई जा रही हैं
तुम्हारा नाम इतिहास के पृष्ठों से
मिटाया जा रहा है विरोध किया जा रहा है,
तब तुम विश्व मानव के
भग्न हृदय में
जिसे तुमने निर्दयता से
कुचला था जनवाद के नाम पर
सीमित दृष्टि से निरन्तर जलाया था
वहीं बड़ी सजग करुणा के साथ स्थान पा रहे हो।
अब भी वह तुम्हारी समाधि को फूलों से
ढक जाता है चुपचाप।

ख्रुश्चेव के तुम्हारे इतिहास से भ्रष्ट
स्तालिन विश्व मानव ने
बावजूद तुम्हारे राक्षसी कृत्यों के
तुम्हें अमर पुरुषों की पंक्ति में स्थान दिया है।

जनवादी समाजवाद के मार्गद्रष्टा
दुर्वासा के रूप में तुम
युगयुग पर्यन्त अमर हो।

पड़ गये जो भी बर्बर की राह में।
गुमराह करनेवाले पुराण और इतिहास
शास्त्र और दर्शन
धर्म और आचार
नैतिक धरातल पर
अभिनव कसौटियों पर
खोटे हुए साबित,
भड़क उठा प्रतिरोध

जनता जनार्दन के
विश्वास की नींवें
हिल गईं अचानक
श्रद्धा के महल सब
धक्के से ढह गये।
डार्विन और उसकी बिरादरी के लोगों ने
मार्क्स और एन्गेल्स ने
प्रूधों और बाकुनिन ने
लेनिन और क्रोपाटकिन ने
स्तालिन और बुखारिन ने
विज्ञान और दर्शन की
समाज और जीवन की
नई नई व्याख्याओं से
आस्था के पुरातन पिरामिडों को
भेज दिया रसातल।

मानव के अन्तर्जगत में
हुआ आविर्भाव जिस तूफान का,
जिस झंझावात का,

उससे उलट पलट होगया
सृष्टि रचना का स्वरूप !

बाहर के बवंडर से
भीतर के बगूले की होड़ नहीं,
जोड़ नहीं उसका
कितना विनाश !
कैसा ध्वंस !
अकल्पित परिवर्तन !
निर्माण के डगमगाते चरण
ले चले हैं मानव को
जीवन के खंडहर में से
दृढ़ता से,
धैर्य से
अदम्य साहस से
वहां
जहां भविष्य लिख रहा है नई लिपियों में
सुनहरी आभा के नये नये ज्वलन्त लेख ।



तस्कर

तस्करता के चोर द्वार से घुसकर
अब्दुल हमीद ने कमाया धन बेहिसाब
दुर्दम गिरोह का सरगना बना है वह
सोना के कारबार
चलता उसका व्यापार
उसके वश में हैं सेठ साहूकार
वरिष्ठ नेता
गाँवों के चौधरी
सरपंच,
हिन्दू मुसलमान,
नहीं है उसका कोई ईमान ।
वो वे पाकदामन हैं
दीन के मुरीद हैं
धर्मध्वजी कहाते हैं
सत्याचरण बताते हैं
पुलिस के संरक्षण में सुरक्षित है उसका कारबार ।

कुछ साल पहले
एक ऊँट का मोल उसके पास था नहीं
घर में थे फाके
बाजार में भी नहीं साख
अपनी घरवाली से वह मिला सकता था न आँख ।

रातदिन ताने
रातदिन तेवर
रातदिन खिचखिच
खुशहाल पड़ोसी से बीबी का लगाव
उसे नहीं था स्वीकार।
लेकिन वह करता क्या
कुर्ता और सलवार
बुर्का और गले का हार
जुटा सकना था आसान नहीं।
दीनदार, पर वह मजबूर था
रोजी कमाने का सलीका उससे दूर था
देखा था उसने न
आमदन का कोई द्वार।

उस अभागे दिन
जागा अचानक उसका भाग
बीबी की गुप्त आय का जब मिला उसे सुराग।
गिलट और चांदी के जेवर
झूठे मोतियों के सस्ते हार,
छींट के कुर्ते
साटन के सलवार,
देखता रह गया वह आंखें फाड़।
एक बार औरत की कमाई में
पाप समाने का हुआ विचार
पर लालदास की इज्जत का सवाल
उसके था आगे,
वह चुपचाप था
था वह लाचार!

कोनों से, खानों से
मोरों से ताल से
घूर में छिपाये
कबाड़ में लुकाये,
ईंधन में दबाये
आधुनिक अस्त्र और प्रसाधनों का ढेर किया उसने
आग लगा फूंकने को
किन्तु फिर सोच समझ बटोर लेगया बजार
उठाये कई सौ रुपये
नामदू का लिया ठेक
जिस पर उसकी थी कई दिनों से आँख।
अब्दुल हमीद ने की तस्करी से साठगाँठ।

कत्था सुपारी कपड़ा, कालीमिर्च
चावल, चीनी गुड़ की
चुपचुप निकासी में किया उसने योग।
तत्परता और मुस्तैदी में
मारकाट और जोखम में
बेखौफ आना बेखौफ जाना
सोने और केसर की पेटियाँ लाना।
होगया वह मालामाल
होगया निहाल।
अहमदाबाद बम्बई पैरों तले होगये
मौलवी पंडित इमाम सेठ साहूकार
सर्राफ संतरी, उच्चाधिकारी सभी
बड़े बड़े जो हैं छिपे तस्कर सम्राट्
चेहरों पर डाले देश-सेवा का नकाब
अब्दुल हमीद के मुरीद हैं हैं पैरोकार।

[प्रतिवेदन के स्वर

उसकी राह पर नकाब बना घूमता है
भरे बाज़ार कितना डर है उसे ?
पीछे जब लाख रुपया है रिवार्ड ।
औरत की नज़रों में उठा नहीं फिर भी
तानों से जर्जर करती वह नित्य उसे
दुनिया में विजयी
घर में वह पामाल
मरदान की कमान में झुका भी
अन्तर की पीड़ा से पीड़ित
हमीद का वह अन्तिम हुआ अभिमान ।
सड़कों और पगडंडियों ने रोका नहीं उसे
रोका नहीं चोरों और चौहड़ों ने
सेना और पुलिस चौकियों को कर गया पार ।
इस फन का था माहिर
किन्तु वह गया कहाँ ?
काफ़िला का काफ़िला बिना आँधी तूफ़ान
बिना किसी घटना के आदमी और सामान
ऊँट और पलान
हो गये विलुप्त बीच राह में
खोज खोज हारा उसे
दोनों ओर का जहान ।
इन्सान खो गया !
हैवान खो गया !
पुलिस रोमांचित है
दुनिया है हैरान
डाकुओं में सनसनी
ताकतों में तूफ़ान !
मालूम हमीद का न कोई घर किसी सुराग ।

भाप बन उड़ गया था
जल ही बहा कहीं ?
रोक लिया गोपनीय प्यार ने ?
नहीं नहीं ।
बनकर रहस्य एक रह गया
न कह गया, न सुन गया,
डेढ़ सौ सोने की सिल्लियों के साथ
पुलिस कस्टडी में जो बन गई थीं पीतल
जोड़ते हैं कोई उसका संबंध ।
कोई विजीबैंक के वैगनलोड कांड में
पाते हैं उसका हाथ जो कि
सील्ड गोदाम में बाँध ली टिन
बीयर और मिट्टी के घोल में बदल गये थे
रातों रात, रातों रात ।
एक टुक सिगरेट,
जिसके लिए होनेवाला था उसका बावेला
पुराने अखबारों का बोझ मात्र निकला
जानते हैं इसको कोप न के समान ।

रोती है हमीदा
न कहती है हृदय की बात ।
वीरान रेगिस्तान में
उसने सपनों में देखा
लहराया करते पत्ते
धन धान्य हाथों से
जिन पर रक्तरंजित होने का न करेगा कोई गुमान ।

[प्रतिवेदन

साँई और फकीरों ने
दरगाह और पीरों ने
किया है समर्थन उसकी हत्या का।
और बताया होंगे होंगे कामों में—
वे हैं शक्तिशाली लोग
चुप रहना ही बचा देता है।
वरना राज-कोप का कहर
कर रहा है बेला का इन्तजार।



अजगर और चाँद

श्वेत अजगर सा भीमाकार।
मृत्युसम दुर्निवार
अन्तरिक्ष में पसरता रेंगता आ रहा है
मीलों तक लपलप जिह्वा लपकाता
दूज के चाँद की ओर।
नील आवेश बसे
बिजलीघर की चिमनी के व्यापक विवर से
उगलता हुआ पत्थर के कोयलों का बेस भरा धुआं थाह!

संध्या की गोद में बमसुर-सा बाल शशि
बादलों के झलमल अंचल की ओट से
भूल चौकड़ी छलांग
ताक रहा
झांक रहा
कांप रहा
सिमट सिकुड़ सब
शंकित चकित चित्त
स्तंभित हृदय,
सिहरता सा गात लिए
अब तब आ रहा कराल काल-गाल में।

वसुधा में नील नभ
सम्मिलित दुखातुर है

अमृत निचोड़ लिया कुंठित सर्प ने
चूस लिया चूस लिया,
जीवन का रस, सुवर्ण
रिक्त मन रिक्त प्राण
रिक्त ऐश्वर्य
रिक्त मन-प्रांगण प्रतीची का कुसुम-थाल ।

चिमनी का धुआं, नहीं
केंचुली अजगर
खोल रहा सघन
फूलों का सौरभ
कमलों का मृदु मधुर हास
धक धक भट्ठी में झोंकता रहे वे झोंक
ताप तप्त
प्राण दग्ध
घुल घुल भट्ठियों में कांपते झलकते
सौम्य मुख राख हुए जा रहे हैं जिनके ।
धरती के चांद थे,
घरों के थे प्रसून ।



भाषा विवाद

भाषा विवाद,
कैसा यह भाषा विवाद !
मानव का उन्माद
प्रदर्शन औ हड़ताल
हत्याएं, अग्निकांड,
ध्वंस, विनाशलीला
क्या भाषा-विवाद के समाधान ?

भाषा साहित्य, शिल्प,
कला, विज्ञान
मानव की साधना के प्रमाण
शान्त वातावरण में हुआ है इनका विधान
इनके नाम पर संघर्ष,
इनके नाम पर अनाचार !
लक्षित है मानव के अन्तर का दैन्य
विकास और निर्माण से
नहीं है उसे रंच प्रेम।

भाषाएं नहीं चाहतीं साम्राज्य खड़ा करना
उनको न सत्ता से मोह
भाषाविज्ञान है प्रमाण
उनके सहयोग का
उनके सहयोग का

आदान प्रदान से ही उसका निखार होता
होता उसका परिष्कार
शृंगार होता
शब्द-अर्थ-योजना
अभिधा लक्षणा व्यंजना
रस रीति अलंकार
भाषा के अनेक द्वार
सभी खुले
अबाध उनमें प्रवेश सबका
न ऊँच न नीच छुआछूत का विचार
विविध भाषा-बोलियों के वर्ण क्रम से
भरता है सरस्वती का भंडार ।

कौन ऐसी बोली है
कौन ऐसी भाषा है
जिसका निराला रूप
जिसका पृथक विकास-क्षेत्र
जिसका न किसी से संपर्क सरोकार ?
जातियों, फिरकों कबीलों के
महावन में
भाषा-लताएं फैलती हैं
फलती हैं
फूलती हैं
हरियाली छाया के नीचे सब झूमती हैं
करती फूलों की वृष्टि
सुरभित फूलों की वृष्टि
नित नई नई
जहाँ तक सभ्यता और संस्कृति की जाती दृष्टि ।

उसमें न है कहीं विकार
इसमें न छिपा साम्राज्यवाद
हीरे के पीछे दौड़ भागना
न जिसका अस्तित्व कहीं
व्यर्थ है, है बेकार
बढ़ने दो उनको
अपने ही खाद-पानी से
बन्द न करो भावजगत का नैसर्गिक व्यापार।



कगार

नदी की प्रचंड प्रखर धारा ने
यौवन की आंधी में
सब कुछ दिया बहा
किनारे पर खड़ा कगार
मूक
स्तब्ध
दुर्निवार उत्कट प्रेम से वशीभूत
रोक रखने के लिए विद्युत्प्रवाहिनी को।

प्रलय संचित का कर तिरस्कार
किसी के स्वप्नों में खोई
किसी की याद में भीगी
रोमांचिता
विस्मिता
रची प्रेम-रस में
सन्तप्त समय में
उद्दाम गति नर्तिता
घनानुमन्त्रिता श्याम
दुर्दान्त चली विजयगामिनी !

भू से गगन तक
मरकतमय बालकिरणों से रंग गया
धवल धवलतर !

सो कर उठी सरित्
लहरियाँ सिहर उठीं
अद्भुत नू मार देख
कंकाल मृत्तिका का बड़ा था विरूप-सा
छिन्न-खंड सा
न जिसकी ओर दृष्टि जाती थी कदापि ।
यौवन का कैसा अपूर्व स्पर्श-दान है !
अब रस गंध का समन्वित कलेवर
खींचता है अनायास मन उधर
उभार आज लहरों में आ रहा
उफान मन में
आकुल कल्लोलिनी का वेग बन गया
थम गया प्रवाह
मौन हो गया उसका नृत्य
चिरकाल पर उसकी
सिहरन का बढ़ गया भाव ।

मुकुलिता लता के स्निग्ध स्नेह में विमुग्ध
कगार नहीं देख पा रहा परन्तु
परिवर्तन का चमत्कार ।
काल की विडम्बना
विकट आत्मघात गति !

ललिता भुजगिनी विलोम मनि
वक्र दृष्टि
एक फुफकारती
पटकती सहम फन
काटने लगी कछार
झूमती लता का सोहाग
उजाड़ने में उसने लगा दिया समस्त बल
किन्तु प्रणयी युगल न भीत हुए
मौत के गले लगे खड़े रहे खड़े रहे ।
नाग फेर करके भी उनका
न उनका प्यार
बहा सकी सरिता की क्रुद्ध धार ।
निर्जन में निस्वन काल-लीला पर
आज भूल है उनका यह अनन्य प्रेम ।
सुना जा सकता है दिन में किसी समय
अमर संगीत उस शाश्वत प्रणय का ।



पनघट

कर दिया बराबर संविधान ने सबको
सबको समान अधिकार प्राप्त
कोई न बड़ा छोटा रहा
धर्म निरपेक्ष भारत में।
कौमों और जातियों का
मजहब और सम्प्रदायों का
धुल गया भेद।
हिन्द महासागर की गोद में
राष्ट्र—एक महाराष्ट्र जागा।
कैलाश से कुमारी तक
बंगाल से खाड़ी तक
एक-सूत्रता में बद्ध
सदियों से बिखरी मानवता को
मिला एकता का नया सत्र!

एक सूत्र
एक ध्यान
एक प्राण
एक मान
एक मन
एक तान
हमारा भारत महान

धरती से आसमान तक कर्मगोचर
जगह जगह,
यही तथ्य यही ज्ञान
सुनते हैं ऊँच नीच का विधान
भूलकर मानव-विकास में
जुट गया है यहाँ का कण कण, प्राण प्राण।
गर्व से उठा धूम
पूर्वजों का हुजूम
छोड़ छोड़ स्वर्ग का नित्यानन्द
आगया यह भारत-भू पर।

नया नया पनघट
नलों की नई टोंटियों का जमघट
तांबे पीतल के कलश
टीन के डोल और लोहे के बाल्टे
मिट्टी के घड़ों से लड़ने को तैयार
फूटते कपास
घड़े चूर चूर होते
पनघट पर कायम है अभी
ऊँच नीच का विधान।

कौन कर सकता है हिम्मत यहाँ
राजा यहाँ का है बड़ा पक्का समाज ?
हिन्दू मुसलमान
तामी और मोची
सिक्ख और चूड़े,
अलग अलग टोंटियों पर अंकित है

जातियों के नाम ।
मिटा दिया उनको नये शासन ने परन्तु
मन से मिटा नहीं
वह भेद-भाव
ज्यों का त्यों कायम है ।

कड़ियों में बद्ध
ज्ञान गरिमा-शून्य
गिरा मुख भरा विषाद
आदमी को आदमी न मानने का औघड़ हठ
मनों और प्राणों में संजोये विष
लड़ रहे हैं भारी नर
कंठ फाड़ ।
ईर्ष्या द्वेष के बीज बोने में है उन्हें कमाल ।
प्रभुत्व पाने को समधिकार
करते हैं मांग किन्तु
उसमें नहीं मानते हैं किसी अन्य को भागीदार !

टोंटियों का स्वच्छ जल
नियामत लोकतन्त्र की है
पीने का जिसे सभी को है एक सा अधिकार ।
संविधान कहता यही
मंशा संविधान का परन्तु
इन्हें है कब स्वीकार ?
मूर्ति पर खड़ा किया
देवता संविधान का जो
तोड़ फेंकने को वही आज ही है तैयार ।

उन्हें नहीं ज्ञान
करने क्या जा रहे हैं
मानव के हकों का कर तिरस्कार
टोलियों में जब उन्हें भरने न देते गँवार !

धोया और नहाया हुआ
गंदला भयानक जल
नाली से बहकर
कुंड में भरा है जो
पशुओं को अर्पितकर
रोगों का घर
इस जलती ग्रीष्म ऋतु में
आधा घड़ा पाने का कहाँ है उन्हें अधिकार ?
यह भी बिना दस बीस गालियों के मिलता नहीं
सार्वजनिक पनघटों पर है यह हाल !

संविधान की अवज्ञा का
कानून की हत्या का
सवर्णों को मिला है पट्टा किस न्यायपीठ से ?
कब तक चलेगा यह अनाचार
बुद्ध और गांधी
कबीर,
गुरु-नानक
पनघट पर दर्शक बन खड़े खड़े
राजेन्द्र बाबू से
नेहरू से
हिन्दू-समाज से

अछूतिस्तान के स्वर]

किन्तु उत्तर कहीं से नहीं आ रहा
वातावरण होता जा रहा विक्षुब्ध
घट असंतोष का भरता चला आ रहा ।

पनघट पर घड़ा लिये
प्यासा खड़ा अछूत
रक्त-क्रांति का अग्रदूत
चेतो चेतो
अनागत भविष्य के आने के पूर्व
ऐ महन्तो !
उच्च वर्णों के किरीट !

पनघट को सविधान से होने दो
शासित बनो मत बाधा तुम ।
नाश के कगारे पर
धकेला न दो
समाज के बर्बर हवि को
ढह जायगा यह साथ में
तुम भी रसातल में समा जाओगे
भूलो न इस सत्य तथ्य को कदापि !



मिथ्याचार

मिथ्याचार कहता पुकार
मुझे प्रश्रय मिला है
द्वार द्वार
घर घर
गाँव गाँव
ठाँव ठाँव
मेरे लिए सबसे बड़े सुरक्षा के स्थान
वही हैं जहाँ मिलता है दंड मिथ्याचारी को।

भाग्य की विडंबना मेरी नहीं इसमें
यह है शुद्ध सनातन व्यापार
सत्ता से खेलते सभी हैं प्राय
खेलते सभी पै सदा
कौन सत्ताधारी कब
चूक से रहा चुका ?

सतयुग
द्वापर
त्रेता
या कि कलयुग
सत्ता का सिंह
दबोचता रहा निरीह जीवों को त्रिकाल।

मिथ्याचार उसके साथ
शासन का अंग बन गया
न आया पकड़ में कभी,
तड़फड़ाता तोड़ता दम
उसका अपना शिकार ।
शासन और विधान सब
मिथ्याचार के विरुद्ध
फिर भी शुद्ध रूप में
टकसाली सिक्का सा
चलता वह निर्विवाद ।
साहूकारों में न रोक
बाजार में न उसे टोक,
शासन के सभी विभागों में व्याप्त वह
रेलों और बसों में
पाया है उसने स्थान ।
दफ्तर में घुसा वह
थाने में पहुँचा वह
निर्माण और विकास में है उसका एकछत्र राज ।

मारना उसको असम्भव
त्यागना उसे मुश्किल
जीवन का बहुत बड़ा अतिथि है मिथ्याचार ।
लोकमानस में
ग्राम पुलावों में
सचमुच वह साकार ।
अभिशप्त भी वह वरदान तुल्य वरणीय
देखने में आता वह
फिर भी कभी कभास ।

आत्मबल की वज्र-कठोर चट्टान से वह
टकरा जाता दिग्भ्रमित
उड़ते स्फुलिंग
होता विस्फोट
विद्युत प्रकाश से भर जाता जहान,
मर जाता मिथ्याचार का तूफान।

युग के वे स्वर्ण क्षण
इतिहास में अमर
उनको मिटाना है न किसी के लिए आसान।



नाला

यह नगरपालिका का नाला
दुर्गन्ध भरा,
यह मैल भरा
यह कीचड़-काला-पीक भरा
बहता जाता
बहता जाता
कल कलकर यह कहता जाता
मरे मौतों की मनोव्यथा
पनिहारों की दुख-दर्द कथा !

अनगिनत जातियों का संगम
मर्यादित नालों का प्रासिचन
गंदा नाला
इतिहास पृष्ठ मानव-संस्कृति का
चित्र नवाक सभ्यता का
नागरिकों की रुचि का प्रकाश !
इस नाले में बहते विचार,
यह नाला है जीवित प्रचार,
सब वादों का
ऊँचे ऊँचे आदर्शों का ।

है साम्यवाद इसमें निमग्न
यह लोकतन्त्र का रूप नग्न
यह नाता है जीवन समग्र ।

अभिनायकवादी यह नाता
जातीय श्रेष्ठता का वाहक
इसका मंथन करते जा-जा
हँस हँस
रस रस
रिस रिस,
वे अवश विवश
दुर्बल मानव
हो रहे सभ्यता का पुरस्कार
जो अकड़
विकट
संकट-आकुल ।
घुसघुस
घुमघुम
घुनघुन
सिर से पैरों तक नहा
पसीने मैले में
नाते को करते स्वच्छ नित्य,
जन-सेवा-रत रहे साम-
न्तान्त तन्त्र, वे परितोष !

कितने भूलों को बहा साथ
लाया करता यह
सांध्य-प्रात ।
पापों का लौह आवरण बन
खिड़कियों पर
घनघोर पदार्थों का पर्दा ।
यह नगरपालिका का नाला
युग युग से नगरों की गाथा का
एक मात्र प्रच्छन्न स्रोत
आशा-आकांक्षा शोक-रोष
इस नाले के मन के साथी ।
यह है समाज का शुद्ध स्वच्छ दर्पण
बिंबित इसमें नागर-संस्कृति ।

युग युग की नगर-सभ्यता का
जीवंत रूप
बहता जाता
सड़ता जाता
कीचड़ से बचा धुला जाता !

यह श्वास-पथ,
यह ऊपर नीचे से प्रबुद्ध
असमञ्जस हृदय की यह
कुत्सित का परम पवित्र द्वार
यह नगर-मार्ग में
पुण्य तीर्थ का परम रूप
निर्बाध

प्रगति-सोपानों पर गतिशील
किन्तु प्रगति के बीहड़ में विलीन
होने को आतुर है नितान्त
गहरा नाता, यह प्रांत प्रांत !



कितने भ्रूणों को बहा साथ
लाया करता यह
सौम्य-प्रात।
पापों का लौह आवरण बन
विकृतियों पर
गम्भीर पदार्थों का पर्दा।
यह नगरपालिका का नाला
युग युग से नगरों की गाथा का
एक मात्र प्रच्छन्न स्रोत
आशा-आकांक्षा शोक-रोष
इस नाले के सब हैं साथी।
यह है समाज का शुद्ध स्वच्छ दर्पण
चित्रित इसमें नागर-संस्कृति।

युग युग की नगर-सभ्यता का
जीवित रूप
गंदा नाला
सड़ता नाला
कीचड़ से सना, घुटा नाला !

यह स्वास्थ्य-पथ,
यह अमर नीचे से मधुर
अस्वच्छ हृदय भी यह
शुचिता का परम पवित्र द्वार
यह नगर-आदर्श में
पुण्य तीर्थ का परम रूप
निर्वाण

प्रगति-सोपानों पर गतिशील
किन्तु दुर्गति के बीहड़ में विलीन
होने को आतुर है नितान्त
गहरा भाला, यह भ्रान्त बाँस ।



नफा नुकसान

हाथीजी को है याद नहीं
वे कब बैलों के जाये थे
कब साथ साथ वे चरते थे
सुख-दर्द बंटाते थे मिलकर।
है भूल गया उनको रिश्ता
वह पाप हार कर प्रथम बड़ी
तापसी धुन्ध में
घर में उसको ठौर नहीं
जो प्यार बहिन का पाती थी
जो बुढ़िया सी बन जाती थी
खेती की आंगन में
टूटे मांचे के पास
रजसी
गाती-सी चुप स्नेह-गीत !

सोते-जगते, खाते-पीते वे
हाथ फेरते चलते थे
उसके कोमल चिकने शरीर पर
पुचकार भरा था प्यार विपुल
तब, जब वे हाथी बने नहीं थे
बाड़ीवान मात्र थे।
प्रातः से सांझ तक

धूप हवा पानी में
बैलों की जोड़ी के साथ साथ
ढोया करते थे वे अनाज
स्टेशन से गोदामों को ।

बैलों का उनको था गुमान,
गायों का था अभिमान बड़ा
कुछ ऐसा था
अटूट गहरा संबंध
कि उनको भुला नहीं पाते थे वे
उस समय
जबकि जीवन था सीधा और सरल
सस्ता अनाज था
सस्ता था सब कारबार ।
बैलों गायों का मोल
न-कुछ था
पर उनका जीवन में था स्थान बड़ा
सौहार्द-स्नेह-बंधन कठोर
थे उनमें वे यों बंधे हुए ।

फिर विश्व क्षितिज पर
उठा अचानक एक बड़ा तूफान
युद्ध-आह्वान
कि जिससे फूट उठा
जीवन के अन्तस् का विराट
अति बड़ा विकराल ज्वालामुखी ।

बदला समाज
सब बदल गये उसके मूल्य ।
गाड़ीवान,
गाड़ीवान कौन रहा गाड़ीवान ?
जीवन के मोड़ पर
छोड़ आया गाड़ी-बैल
बेच बाँच पाँच सौ की एक-एक
रातोंरात गाड़ीवान बन गया ठेकेदार
गाड़ीवान ठेकेदार
गाड़ीवान ठेकेदार !
इज़्ज़तदार ठेकेदार !
खुला मिला काला बज़ार,
खूब चला व्यापार
उन्नति के श्रृंग पर
जा चढ़ा ठेकेदार
तैर चला चाँदी की सरिता के पार-पार

नया बना साहूकार,
दीन और कलाम पर भारी चढ़ा खुमार
मक्का-मदीना हज्ज-नमाज से
हो गया अपार प्यार !

काल-महासागर का पार कर विस्तार
बीत गई गुजरती सी
स्मृति में कभी कभी
उठता ज्वार,
कभी कभी हाजी की आँखों में

[प्रतिवेदन के स्वर

घूम जाता चक्र;
गाड़ी बैल, गाड़ी बैल
घास फूस कच्चा घर
आंगन में, नीम तले,
करती जुगाली खड़ी गाय कहीं आंखें मूंद ।

स्वप्न पड़ जाते
पल मात्र में परन्तु वे
जीवन का नशा होता जाता नित्य गहरा ।

छप्पर के स्थान पर हवेली का निर्माण
होता गया, ज्यों ज्यों बेचारी दीन
दुर्बल, गाय यों खिसकती गई
कोने से कोने में
कोने से कोने में,
अन्त में होगया कोना भी उसे मुहाल ।
वैभव बरसता गया
नशा गहरा बढ़ता गया
गाय गोशाला किन्तु होते गये संकरे ।

हाथी है सजते मकान पर मकान
कुछ वर्षों के किन्तु घिसते गये स्थान
दीन-धर्म के स्तम्भ
हाड़ी और गबरून में
हाथी का खिल उठा रूप ।
मजार भी तकिया भी
कमज़ोर

गोश्त कबाब,
खालो शराब
बे हिसाब
हाजी जी ही बने दूसरे नवाब

गाय से गया रिश्ता टूट
आ गई वह सड़क पर छूट।
कहीं बाहर से हुआ किनारा
खड़ी है बेचारी बेसहारा
देख रही बेकल विराम
कहाँ गया स्नेह-धाम ?

आँखों का चश्मा,
हाजी जी का
खिसककर आ गया है नाक के अग्र भाग पर।
गाय के अस्थिपंजर देख
लगा रहे हैं हिसाब
क्या हुआ कितना हुआ
लाभ या नुकसान ?

लाभ या नुकसान,
पूछ उठी धरा-धाम,
गाय खड़ी ताकती है
कांपते हैं हाथ थाम !



लोकतन्त्र

तन मन स्वतन्त्र,
जन जन स्वतन्त्र,
भारत में आया लोकतन्त्र ।

नारी स्वतन्त्र
घर की विभीषिका से बाहर
चल पड़ी
उफनती सरिता सी,
तोड़ती कगारे
मर्यादा का तिरस्कार करती ।

स्वच्छन्द जन्तुओं का जीवन
अभिनव आकर्षण बन
उनकी पतवारहीन नौका-सा
तीव्र धार की ओर से चला
घूम कर नहीं देखने की रुचि रखे,
कुछ भी अतीत का
ढोयेगी वह नहीं भार ।
तन मन का राष्ट्रीयकरण कर
शोषणहीन समाज
बनाने का प्रण लेकर
वह शक्ति, वह है प्रमत्त ।

नारी स्वतन्त्र
अपनी इच्छाओं की रानी
उसको अपने से प्यार
पर गृहस्थ पति संतानों का भार न उस पर,
उन पर तो अधिकार राष्ट्र का,
परिधि मोह की उसे बाँधने में अब असम,
व्यापक उसका प्रेम
समाया जिसमें जन जन ।

नव युग्मों
नव संबंधों की नवस्फूर्ति से
वह परिचालित,
नव समाज की अधिष्ठात्रि वह
स्वप्नों के अपने भारत में
करने निकली वरण
व्यवस्था नूतन की वह ।

युग-युग-जीर्ण पुरातन मन
उत्सर्ग त्याग से जीर्ण
कुटुम्बों-परिवारों में बंधा
छोड़ चले युग्म
स्वैरिणी वह निकली
आँखों में लेकर एक नया
वाणी में विष के विषम बाण ।
नारी स्वतन्त्र ।

जन मन स्वतन्त्र,

जन गण स्वतन्त्र

भारत में आया लोकतन्त्र !

घर घर में

नगर नगर में,

ग्राम ग्राम में,

डगर डगर में,

युवक प्रौढ़ जन,

बाल वृद्ध मन

सब में स्वतन्त्रता का प्रवाह

उन्मत्त वेग से प्रवहमान ।

जीवन बंधन व्यापार शिथिल

सकल सामाजिक उपचार

असंयत मुक्त गगन

उन्मुक्त प्राण ।

गतानुगतिकता छिन्न

भिन्न सब

नव जीवन

उत्थान नवोन्नति

नये नये पथ

नये क्षितिज पर नये उपग्रह

मनचीन्ही मनचुनी

अभीप्सित दशाओं में भ्रमणशील

निर्बाध

निरंकुश

निरवलंब !

[illegible] के पार]

स्वच्छंद धरा
स्वच्छंद धाम
स्वच्छंद व्योम,
स्वच्छंद याम,
स्वच्छंद ऊर्मियों का प्रवाह
है चला बहा प्राचीन, पुण्य
मन्दहास्य
जन के स्निग्ध सत्व।

स्वातन्त्र्य-सूर्य के नवालोक में
नये मूल्य
नव दृष्टि
सृष्टि नव
दीप्यम गर्विता व्याप्त
वातानुकूलित जीवन के पोर-पोर !

संतुलन शून्य अविकास
तदपि मानव-उर में उल्लास
उज्ज्वलित
आशान्वित विश्वास
कोटि कोटि चरणों में
चपला की गति चंचल
जुटा रही जीवट
अटूट
संघर्षों से दीप्तित
उत्पादन विपुल
रिक्त भय
स्वस्थ चिरायी
प्रचुर संभावनाओं से उज्ज्वल लोकतन्त्र।

जन मन स्वतन्त्र
जन मत स्वतन्त्र
भारत में आया लोकतन्त्र ।

• •

आश्वासन !

चिर नवीन आश्वासन
प्रगति-पथ का संबल,
बल,
साहस,
सत्प्रेरणा,
युग युग
प्राणों का पूरक
आश्वासन !

आदिम युग से हाथ थाम
कल्पान्तों के बीहड़
दुर्गम पथ,
संकटापन्न
उत्कट पिच्छिल,
सागर संकट
भूचालों-ज्वालामुखियों के
कंपित
चलते मुड़ते पथ
करा चुके संतरण
सहज उसके अतिक्रम कर।

प्रति बार नये
प्रतिदिन नूतन आश्वासन
जीवन का भरते रहे रिक्त घट
तरल
हलाहल से प्रतिपल
छलते मानव को अहरह !

ओढ़ धर्म का छद्म वेश
उपदेश नया
परिवेश नया
मन्दिर मठ मूर्ति पुजारी मिल
आश्वासन का सुरभित पराग
भरता
भरता
युग युग
जन मन ।
भूखा मानव
लड़ता
मरता
गिरता
पड़ता धमधक आकुल !

प्राग्भारत का बलिदानी पथ
रक्तारक्त हुआ
शत सहस्र बार।
खांडे-कृपाण की तीक्ष्ण धार,
प्राग्भारत ध्वज उत्तोलन कर
वीरात्मों विजितों के मन में
भर चुकी अनेकों प्रखर ज्वार।

निर्माण ध्वंस सोपानों पर
चढ़
गिर,
इसके जन
हुए सफल
मार्गान्वित नहिं पुनरागमन;
मुकुलित
पुष्पित
फल सुवास।

प्राग्भारत के जीवन्त चरण
तीर्थंकर सतत
सतयुग
त्रेता
द्वापर
कलिपर
छोड़ती गये प्रगति के पथ छाप।

[प्रतिवेदन के स

पुनः प्राप्त आश्वासन
अमर मानवता हित
सदय हृदय
परदेशी सामी का द्रोह
निर्मल रूप लेकर
समुपस्थित
करते हैं मंजिल में घोषित
'आगामी '८० में
प्रति व्यक्ति एक घड़ा प्रतिदिन
देने में होंगे हम समर्थ ।

यह दशाब्दि पर्यन्त
महान चमत्कार की यह सिद्धोपलब्धि !
आश्वासन वरदान प्राप्त कर
विगत
व्यथित
मंथित
विहसित
विचलित जन मन अनुभव !

एक क्रान्ति का सूचक
तोतला
संग एक आश्वासन !



भावात्मक एकता

धर्मविरोध-ग्रस्त
रोमरोम
नस नस
एकीकरण मन का
क्षीयमाण
भावात्मक एकता
दुःस्वप्न मात्र।

शीश गात हाथ भिन्न
भिन्न शिरा
भिन्न तंतु
प्राण का प्रवाह भिन्न;
बढ़ चले विलोम गति
पग सभी,
अहरह होड़ मची
आत्मघाती विघटन प्रयास जन जन का।

विफल प्रयास एक-जुटता के
जीवन-दर्शन-युग में
पड़ गई दरार स्वार्थपरता की
विषम विष व्याप्त
सुधा सिन्धु ।
अपनी अपनी डफली
अपना अपना राग
सब गाते औ बजाते
नहीं सुनना चाहता
कोई किसी की बात ।

प्रगति क्रम के नेता
सिद्ध पंथ के प्रणेता,
लोभी,
समाजी
कसाई
सब ओर रहे छाई
लोकतंत्री-चेतना शून्य
जन मानस ?
नहीं नहीं
भेड़ गण ।
सत्ता लोलुप
विरोधी निरा
संस्कृति भाषा
विधि विधान के प्रति निष्ठावान ।
भूल निज पथ निज कर्म ध्यान ।

भावात्मक एकता की प्राण
राष्ट्रभाषा
हिन्दी का पद पद प्रतिष्ठान !

ज्योतिकिरण-आकांक्षा
सर्व सेवा इच्छित
ऊपर से नहीं, नीचे से
जन जन से
मन मन से
उच्छलित,
उर्मिल
भरेगी मन रिक्तता को
सब व्यवधान को
प्रस्तुत कर समुचित समाधान !

भाषा के अम्बर से
जीवन की गिरिकन्दरा से
बहकर लाया
बनेगा एकता का सीमेन्ट,
जुड़ जायेगी छिन्नता
भिन्नता
खिन्नता
अभिन्नता के वातावरण में
गूँज उठेगा जन गण मन अधिनायक जय हे !

कण कण
जन जन
इलेक्ट्रोन
न्यूट्रोन
प्रोटोन
धनाणु
ऋणाणु
परमाणु
मिलन-संगीत की स्वर लहरी में
अर्पित हो जायेंगे
होगा भावात्मक एकता का अबाध प्रसार ।

होगी नहीं आघात
मिटेगी न भेंट
दर्शन के दृष्टिकोण में
न उसका कहीं विनियोग
अपने प्राणों के प्राण में
क्षीरसागर में विष्णु-स्वरूप
उसका शाश्वत रूप
रमा है
वह जलती शमा है
उसमें निहित है अनन्त शक्ति
उसे खोना नहीं, पाना है,
बाहर अपनाना है
वही हो हमारा प्रयास ।

कैलाश के शिखर से
कन्या कुमारी तक
द्वारका से कामाख्या तक
भारती वाङमय की एकरूपता का व्याख्यान
लिये है भारत का समुत्थान
यही जीवन, यही है प्राण
प्राणों में भासमान।
यही चिर अभिनव मधुर गान।



ये उल्लू, यह चाँदनी रात !

मधुयामिनी
चाँदनी में धोये धरती आसमान !
रोमान्स का आलम
प्यार की दास्तान ।

कहाँ से उड़ आये इतने उल्लू ?
किन वियाबानों को उजाड़ आये
छिपे कहाँ थे ये हैवान ?

उन्नीस सौ बयालीस से पहले
किन सुनसान खंडहरों में
किन अंधेरी गुफाओं में,
बंद थे ये ?
स्वतन्त्र आज !

चाँदनी रातों की बरमी करते
इनके भारी भारी डैने
वातावरण में हुड़दंग
अन्तरिक्ष में उफान !

र्गोरख के स्वर]

नई कविता

तोड़ चली छन्द बन्ध
कविता-धारा अमन्द
मुक्त भाव
मुक्त ताल
मुक्त मन-मानस
उरेहना सहेजना है
जन्मजात भाव-चित्र ।

शाश्वत सरल सिक्त
वंचित प्रवंचित,
नतिक प्रनतिक
कुंठित अकुंठित
नग्न अवगुंठित,
विश्व मन, विश्व प्राण
व्याप्त चिरजीवित
मर्मोदित
धौतासारित चल कंठ-निःसृत
नई दिशा
सहजता विमुक्त
खोज चली नये पथ !

[प्रतिवेदन के स्वर

नूतन पुरातन के बीच
खड़ा देख रहा दोनों ओर,
दोनों ओर
नवस्थापित
नये प्रतिमानों के वेश लिये
नया मील-पत्थर !

उपमा उपमेय नये
अनपढ़
अप्रमेय
वाम पक्ष
सब सच
संकुल प्रतीकों के अरण्य में,
व्यस्त मन-दशालिमा के
अनजाने पाखियों के पाँवों सा
यहाँ वहाँ भाव भी प्रमाणहीन
छितरा पड़ा परन्तु
बना रहा वेदना
व्यथा से घेर रहा मन
व्यंग्य कर रहा हिमांशु
दलित पक्ष
बन रहा विद्युद्दीप्त एकता !

नई कविता के बावरे पथिक
नव्य भव्य बादल
उन्मुक्त बादल की दिशा में
लिये जा रहे हैं अपने सरस राग !

उठो कवि, चलो साथ,
जाने भी न चले प्रमाद
परम्पराओं के घेरे से बाहर।
प्रसन्न नव वसुधा
चरणों से तुम्हारे सौम्य,
होने को कृतार्थ पड़ा— यहाँ
कहाँ ?
यहाँ, इधर इधर यहाँ!



[प्रतिवेदन

एक किरण

एक चरण एक शरण
एक भाव एक मरण
एकता प्रसार में
अनेकता समाहिता,
न रूप राग
आकृति न
प्रकृति अमेय
नाम धाम ध्येय ध्वनि न ।
नीरव निसार
निराकार
वासनाविहीन
महामौन महाशून्य
दिग्विहीन कालमुक्त
अनिबद्ध अबाधित
अव्यक्त एक बिन्दुरूप,
बिन्दुरूप,
एक चरण, एक शरण,
एक सूर्य, एक किरण !
साध्य एक, साम्य एक,
वाच्य एक भाव्य एक !
एकोऽहम् अनेकोऽहम्
अहं वयम् न त्वम् न त्वम् ।

अप्रैल ५ १९४८]

दो बहनें

बसंत हेमन्त में
शिशिर में,
ग्रीष्म में
वर्षा हिमन्त में
घड़ी की दो सुइयां
साथ साथ
पास पास
फुटपाथ के सहारे
राजमार्ग के किनारे
हंसती किलकती
थिरकती
सिसकती
थिरकती
कहां जाती ?
किसे खोजती ?
रहस्य नहीं खोलती
न बोलती
न तोलती हृदय के भाव
परिचित अपरिचित से;
मन्द मन्द जाती चली
अपने में समायी
तैरती सपनों भरी आँखें लिये ।

शत सहस्र वर्ष उपरान्त
सौम्यता की प्रतिमाएं
छोटी बड़ी सुन्दर्यां
समय का प्रवाह सहे
चंचल चरणों से
चपल, चपल गति
वर्षों की हृत्तंत्री पर
आघात करतीं
नित्य
उसी भांति चलती जाती हैं।

न थकतीं,
न देखतीं,
अपार प्यार के बाहु बंधी
निरन्तर
मस्त चाल।

उनके पदचिह्नों में
सौ वर्ष के
सिंदूरी चांदनी से
रचे काव्य
स्वच्छन्द छन्द
गुनगुना बहता पुलकित समीर,
हरितवसन की शुभ्र वीणा पर,
गुम्बदों के गलियारों में
सुरों की झंकृति मिल
बहाती संगीत की तरल मधुर लहरें।

तुषारों और तारों भरी रातें
पोंछती शबनम से
रश्मियों से
उनके चरणों के पगतल को
आठों पहर ।

घड़ी की ये सुइयां,
समय को पहचानती
हृदय को बिलोती और छानती,
मन्वन्तरों के गहन ललाम
और अछूत व्यक्तित्व को
पैरों तले रौंदती चलतीं
कपोलों में मादक लालिमा लिये,
भोली अबोली
हो भी रचिता !

ज्येष्ठा कनिष्ठा की बहुयें,
रूपरस आगरी
गुलापरी
चटुल चपल अपलेक्षिणी
सुकेशिनी, नतानना,
तू कहीं चलती किधे ?
पुष्पाव के सहारे,
राजपथ को बुहारतीं
पलक बरौनियां

मानती रेणुकण
रात से प्रभात तक
अपलक भाव से,
भरता रूप तरता भूल ।

कौन वह भाग्यवान
कौन वह रूपवान,
कौन वह युवा तपस्वी
मनस्वी संयम रहत छवि
मुग्ध रूप
प्यार श्वास में
लिपटे, जाती भी
चलती जा रही है घुप घुप
प्रमगर मधुर मतिमान्त ?



अतीत स्मृतियाँ

याद किसे आती नहीं
संध्या के कुहासे में
किशोर अतीत की
कल्पना कुसुम वत्
इन्द्रधनुषी स्वप्निल प्रस्थान रूप
वाम दक्षिण पार्श्ववर्तिनी
शत शत स्नेह मूर्तियाँ ।

हास विलास उल्लास पूर्ण
वन विपिन वीथियों में
यमुना पुलिन पर
निकुंज निकुंजों में
अंकित हैं कितने रास लास
हास वास !

समय की सरिता में
बह गये कितने वर्ष !
युग युगान्त
देश प्रान्त
भ्रान्त मन घूम रहा
चकित थकित
घूम घूम नित्य
मधुवन वृन्दावन गोकुल नंदग्राम !

भूली कथाएं बन गये
मधु रजनी के
अनुभूत सुख प्रसंग
खोई इतिहास हो बिखरे
आलमंब के अनुसार भरे
प्रणय निवेदन पत्र तक ।

नूतन पुरातन में
रहा नहीं व्यवधान
समय की दूरी का न भान
क्षणों में समाये
युग रूप
स्मृति का तरल तरल बोझिल
पल पल खो रही
दु पने मिलाकर
सुदूर अतीत यहाँ भासमान
बीता आसमान
सहज साकार बना
तना शिरों पर वितान !

गगन लोक में
खो गई नीहारिकाएं
मधु व प्रकाशित
बिखरे असीम विस्तार में
न किसी न उनका ज्ञान
कितने कहाँ थे ?
कहाँ गये महान ?
विलुप्त स्मृतियों में
कहाँ रहा उनका स्थान ?

अंतरंग के स्वर]

वियोगिनी

मौन के सन्नाटे में
रचा हुआ प्रेम का इतिहास
खो गया
घर के अन्धेरे कक्ष में
मिलन-संध्या
चली गई उदास !

कितना सोचा था
कहते सुनते में
बीत जायगी सारी रात
गिरा अंशु
कंठ रुद्ध हुआ
भूल गई मनकी बात ।

•

वे आये और चले गये
ले गये अपने साथ
हाथों की मेंहदी,
पैरों का महावर
मन के महोत्सव
अधरों की स्मित अवदात !

छोड़ गए युग युग को
वेदों की रुनझुन
प्राणों की गुंजन,
हृदय की धड़कन
भावों की उलझन
आँखों की बरसात !

बच्चन कवि

'बच्चन' हिंदी के गायक कवि
उन्नायक कवि
मन्दिर में 'मधुशाला' लाये
'मधुबाला' लाये
साकी सागर प्याला लाये
हाला लाये
देवार्चन भूला,
धर्म्म भूला,
पथ में पंचामृत रहा पड़ा
जन-मानस उमड़ा
बेहाल विधुर
'बच्चन' की कविता
का कुछ ऐसा नशा चढ़ा।

साहित्य पुजारी हुये सजग,
पंडे चिल्लाये 'हाय हाय'
विप्रों के मुख से कढ़ा शाप
'बच्चन' की कविता सुन किन्तु
सब रहे डोलते
बाल-वृद्ध
सुकवित

पीते मतवाले बने प्रमित
अनुशासन शास्त्रों का टूटा
बह गया धर्म
बह गया कर्म
संयम छूटा
संयोग-मुखर मधुशाला में ।

मधुमय मधुशाला की हलचल
लाई जीवन में नये मोड़
भाषा में नूतन गति
छन्दों में मृदु परिणति
थिरकन मन में
सिहरन तन में
भावना व्यथा से तप्त प्राण ।
'बच्चन' की कविता ने
स्थापित किये
मूल्य नव नये मान ।

'बच्चन' मधयुग के कवि
नव युग की छवि
नवयौवन के उन्मत्त चरण
लावण्य रूप रस के आतुर
[illegible]
धर जिन्हें चरण
हो गई [illegible] गिरा ।

प्रतिदान

पाया मन ने अमित दान
तुम से प्रभुवर !
शुभ वरदान
तुम्हारे संकल्पित अधरों से।
सागर सरिता गिरि कानन
तरु राजि शिखर हिम शिलाखंड
नीरव-निकुंज,
घन तड़ित् ज्वार
कुसुमित दिगंत,
मलयज बयार,
उच्छ्वसित वक्ष
झरझर निर्झर,
व्यापक समीर पावन निसर्ग
रवि शशि नखतों भरा नील नभ
ऊषा
तमिस्रा
धूमिल संध्या।
शस्य श्यामला धरा,
सवत्सा कामधेनु,
पक्षीकुल कलरव विपुल
वनज दल संकुल,
रोम रोम बस महादान से धन्य

तुम मन
प्राण पुलक परिपूर्ण
श्रद्धानत इतहरय हृदय
तव चरण प्रान्त में पुष्ट
समर्पित करता वह सब
जो तुमसे पाया था
ज्यों का त्यों—
अनबरसा,
अनछुआ,
अनपुलित
तुम उसको लो सहेज !

जो कुछ था तुम्हारा
प्रतीक्षा लेने में तुम्हें
हो क्यों किसी विधि संकोच ?



उर्वशी और दिनकर

हो तुम कितनी प्यार भरी
कितनी
मनुहार भरी हो तुम
उर बांध कर लेती हो
पल में, उर्वशी
हार की जीत बड़ी ।

संध्या के सीमन्त सिन्दुर पर
बिन्दु,
पलों में वैभव नीरव
ओठों पर हिम हास
सांस में सुरभि
स्वच्छ विश्वास भरा उर ।

तुम हो पूर्ण सकाम
काम पर नहीं तुम्हारा
लिखा किन्हीं अधरों पर ।
सुमुखि
अप्सरसि
तिमरी काया कलित
प्राण के आलिंगन में ।

विपुल बना है,
मृदुल झिलमिलाति,
इतनी ही मस्त सिहर उभर।

पुकारता मुझ तुम्हें कोमल
आयाचन में,
तुम करती सम
पोड़ और तारों का झिलमिल
मिस 'दिनकर' से।



उर्वशी मौ

हो तुम कितनी प्यार भरी
कितनी
मनुहार भरी हो तुम
उर बसा कर लेती हो
पल में, उर्वशी
हार की जीत भरी ।

संध्या के सौरभ सि
बिन्दु,
पत्तों में वैशाखि नीर
ओठों पर हिम
सांस में सुरभि
स्वच्छ विश्वा

तुम हो पुए
लाज भर
सिखा ।
सुमुखि
मन्वरति
तिमटी ।
प्राण मे

मधुर लहरियों का कल कंपन
साक्षी है जीवन कुमकुम
यह प्रखर प्रहर क्षण
स्मृति के प्रांगण में
जग से पृथक
पुरातन पावन
स्वर्ण कलश सा
मर्म पटल में स्थापित ।

जीवन का नया पथ
दुहरा प्रकाश
धूप धूप
हर्षित
बीहड़ सुरम्य
जनपद खंडहर
किस किस में होकर चला नहीं
किस राग-रोष में गला नहीं ?

दिन रात मास संवत्सर,
पल पल
कितने जैसे ही गये बिखर !
रंगीन चित्र
धूमिल छाया
माता का मोहावरण मंजु,
घट बना बादलों-सा घन है।

प्रतिवेदन के स्वर]

स्वप्न-साक्ष्य

हे किशोर वनफूल
मधुर तव रूप ललित मुकुल मृदु
मादक वैचित्र्य
प्रसून-गुच्छ मालिनी लताओं के
कुसुमांचल में सम्पात
शांत शीतल संध्या-सा
हिम कण से धुलते
पुलिनों का सार्थं
हरितवसना वसुन्धरा का निःस्वन स्वप्न
मुखर हो उठा था
तेरे मधुपर्कों में परिचितातिथि ।

चकित
विस्मित
भूल ठगा सा
मग्न रूपनिधि में तुममें ।
मुग्ध मन मेरा ।
दूरस्थ हिम शिखर,
मन्द पवन
हंसों की पाँतें
कोकिल स्वर,
निर्झर का झरझर

मधुर लहरियों का चल कंपन
साक्षी है यौवन कुसुमकुंज
यह प्रखर प्रखर क्षण
स्मृति के प्रांगण में
कब से पृथक
सुहावन सावन
स्वर्ण कलश सा
मर्म प्रखर में स्थापित।

जीवन का सारा पथ
कुहरा प्रकाश
धूप धूप
हर्षित
बीहड़ सुरम्य
समतल खंडहर
किस किस में होकर चला नहीं,
किस राग-रोष में पला नहीं ?

दिन पल मास संवत्सर,
पल पल
कितने बीते हो गये विगत !
रंगीन चित्र
धूमिल छाया
माया का मोहावरण मंजु,
घिर गया बादलों-सा मन में।

था उठा घटा सा घेर गगन
विद्युत, घन गर्जन
ऊर्मिल स्वर
संतप्त हृदय
हो गया शान्त
हो गया स्तब्ध
छा गई धुन्ध
अवरुद्ध दृष्टि
पुष्पावीजन
विलयता स्मित अंक
प्रस्तुत करता स्वर्णिमा
मधुमय विमल निलय की

हासविलास पुष्ट उस दिन की
बीत रह गई प्रिय
वेश सब गया बदल
सब गया बदल
जीवन
यौवन
स्वर गीत
गीत मन
प्रीत-पावन
मन दर्पण
कोप विसर्जन
प्रफुल्ल अंबर, पर्वत, मरुस्थानि ।

जब भीगी पलकों में
सोया है कोई स्मृति शिशु
स्पंदित जिसका वक्ष
गिराए बनती
बुनती प्यारों के कौशेय वसन।
बोलो, बोलो
कह दो कुछ तो
सांसों का नित संसार सुमुखि
यह अन्योन्य से वंचित बाला
कोमल कुसुम प्रसून प्रणय की।



घन उठा घटा सा घेर गगन
विद्युत, घन गर्जन
ऊर्मिल स्वर
प्रसन्न हृद
हो गया शान्त
हो गया स्तब्ध
छा गई मुग्ध
प्रबुद्ध दृष्टि
पुष्पामोदन
निःशंक स्मित पंक
प्रस्तुत करता स्वर्णाभा
मधुमय विपल मिलन को

हासविलास पुलक तन मन की
बीत गए वे दिन,
शेष सब गया बदल
सब गया बदल
जीवन
यौवन
स्वर गीत
गीत मन
प्रीति-पवन
घन गर्जन
कोप विसर्जन
शाश्वत अंबर, पतंग, प्रत्यागमि ।

उन भीगी पलकों में
सोया है कोई स्मृति-बिन्दु
स्पंदित जिसका मन
छिपाए उगती
बुनती प्यारों के कौशेय वसन ।
बोलो, बोलो
कह दो कुछ तो
सांसों का मित संचार समुचित,
यह स्पंदन है मधित गाथा
कोमल कुसुम समुच्च प्रणय की ।



चेतावन

सिद्धान्त दो राष्ट्रों का
न माना परन्तु
भारत विभाजन कर लिया स्वीकार !
देश के जन जन के साथ
पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालिस को
शुभ घड़ी पर
सत्ता हस्तान्तरण
स्वाधीनता का अवतरण
एक साथ हुआ परन्तु
सतलज व्यास और झेलम में
गंगा, यमुना और संगम में
ब्रह्मपुत्र सिन्धु-दर्शन में
कितना रक्त-पसीना बहा,
भाई लज्जा को भी लज्जा महा !

वह था हमारी स्वाधीनता का समारंभ
शेष रहा फिर भी दम्भ
दो राष्ट्रों के अस्वीकरण का !

तथ्य कथ्य,
सत्य कथ्य,
एक देश में हैं हुये उद्भूत
राष्ट्र को
स्वत्व को
तन को,
मन को
विचार को
मार्ग को
विपरीत औ विरोधी
विरसायुता निमग्न
कैसी हो विडंबना !

कैसी गति
कैसी मति,
शक्ति का अपव्यय,
जीवन का क्षय
मर्यादा का विलय
शान्ति के नाम पर
अशान्ति का बीज-वपन !
विषम विष-वृक्ष रोप
अमृतफल की आशा !

अब भी है समय
न हुआ है अभी अस्त रवि
भारत के भाग्य का ।
कश्मीर की चोटी पर
न दिखने दो धुंध राख ।

हिमालय का सिंह-द्वार,
सीमान्त के उस पार
प्राण की लोहित पीत लपटों से
वेष्टित रहा पुकार,
देखो, देखो प्रहरी स्वतंत्रता के
मानवाधिकारों की रक्षा के कर्णधार ।



चीन की मृत्यु पर

वियतनाम है नहीं
कोरिया नहीं
न तिब्बत
लाओ भी यह नहीं,
नहीं यह ताइपेइ है।
यह भारत है चीन!
कस के हैतु पत्थर हृदय।

मीठे मीठे बोल
छिपा कटु का है अनुभव।
लोहित मेका लद्दाख
क्या ये तीन
जहाँ चीन का दाव
मिट्टी पाने को व्यग्र।

नवशक्तिहुई भारत की
है धन्यवाद देने को उनको पूछ
कि वो
अनिर्वचित और अपरिचित
पुण्य धारा
पुण भाभा शोभा में अपार।

अक्टूबर ६ ६२]

है जिसको शस्त्रों का गुमान
है जिसको सेना का घमंड
है जिसको पशुबल पर आस्था
वह प्रकाश मात्र है दीपक का
अपने ही वंशों का विनाश
करने को फिर घिर रहा धूम ।

यह पूरब का आकाश भाल,
संदेश मृत्यु का लिये खड़ा
उस महाराष्ट्र का
जिसका पथ गौरव विशाल
थामा था भू पर
इसी हेतु
था क्योंकि शान्तिकामी वह
बुद्धानुयायी वह,
प्राण सम्पृक्त
विश्व संस्कृति में था जिसका पूर्णस्थ स्थान
विस्तारवाद से न था कोई काम ।

सम्मुखित सीमा में
भूल हृदय
बन पड़ा अशिष्ट वह
स्वार्थ
स्वार्थ ही रह गया बसे हृदय
दूर हृदय होवहि विलय
हुआ अन्धा वह
मुक्ति संवर्धना के हेतु बना शंकर !

उसका मरघट बर्फ़
बना पड़ा है विश्व लोक
उसके अधि गुहों में
उसके निधन पर
अनुराग करने को
शेष नहीं कोई शोक
शोक, शोक महाशोक !



सेना की हुंकार

कैलाश वास शिवशंकर का
हम उस पर धर्म बढ़ायेंगे ।
हम सेनानी हैं भारत के
गिरि शृंगों से टकरायेंगे ।
है कौन शक्ति भूमंडल पर
जो पथ में बाधा खड़ी करे ।
उस पार हिमालय के बढ़कर
हम राष्ट्रध्वज फहरायेंगे ।

उस चीन चीन का हमें न भय
जब रणभेरी बज उठी यहाँ ।
झंझड़ तूफानों में निर्भय
हम हिम शिखरों पर धायेंगे ।
हम वासी मेरु हिमालय के
रक्षा को बद्ध-मुख गंगा ।
तिब्बत की निर्मम हत्या का
बदला अब आज चुकायेंगे ।
होगई समाधि भंग शिव की
नाचो नाचो के स्वरों से ।
अग्निस्फुलिंग से बमों के
हम उनके उर दहलायेंगे ।



हिन्द की सेना

'विजय सत्य की जय भारत की'—
झंकारित हिम उठा घोष से।
आततायियों के जुल्मों पर
वज्रानल गिर उठा रोष से।
घर घर बढ़ बढ़ बढ़ चले युवक
बस एक शपथ लेकर आये।
इस मानवता के चोर शत्रुओं
को न मिले रास्ता भागे।
मीठे मोती बन्दूकों से
भय हुई न धसा हमारे उर।
हम भारती के दीवाने फिर
हमें गोलियों से क्या डर?
दर्प चूर्ण करने का रिपु का
दृढ़ प्रण हमने ठान लिया।
हिम शिखरों के पार हिन्द की
सेना ने अभियान किया।
भूमि पाहिनी भारत की अब
चली तोड़ने को बंधन।
भारत दश पावन विमुक्त हो
यही हमारा सफल प्रयत्न।



*रेणु के स्वर]

भारत एक परिचय

भले किये साम्राज्य न हमने
साक्षी है इतिहास जगत का।
बाँटी मुक्ति सदा जन जन को
वितरित किया प्रसाद सुयश का।

सह अस्तित्व जगत का सपना
जियो और जीने दो जग को।
स्वेच्छा से विकसित हो जीवन
खुला मिले जन का पथ जग को।

नर क्या कीट पतंगों तक की
इच्छाओं को मान दिया है।
कभी पशु-बल पर न भूलकर
हमने कुछ अभिमान किया है।

सत्य अहिंसा के मार्ग का
हृदय रसायन अपना।
जीवन का आधार बन गया
विश्व जगत का था जो सपना।

आज मुक्ति-कामी भारत की
कठिन परीक्षा का दिन आया।
भूल बुद्ध की शिक्षाओं को
चीन हिमालय पर चढ़ आया।

जिसे मुक्ति का मूल्य प्राण से
भी बढ़कर प्यारा है।
उसे मात्र का नहीं प्राणों
का ही डर सारा है।

पंचशील का प्रस्तोता
पंचाग्नि बीच मत आओ।
शंखनाद के विजय घोष
से भारत को पहचानो।



रणांगण में

भला चीन की क्या बिसात
जो भारत को ललकारे।
संकटकाल कुछ नहीं साहस-
बल जहाँ प्रचंड पधारे।

मुझे हिमालय चाहे भारत
परिचय किन्तु बड़ा है।
भारती का ध्वज प्रतीक
शिखरों पर सदा खड़ा है।

तुम भूल न साखी वीरों के
मतवाले जौहर के।
एक एक से मारे दस दस
बाँके वीर समर के।

कथा लिखी है पहाड़ों में
बहुत गम्भीर वनों में।
बहा रक्त है जहाँ अम्ल बन
बहुतों वीर जनों में।

चलो चलो चलकर देखो
रण-कौशल निज वीरों का।
धन धन साका किया दुहाया
धैर्य समर-धीरों का।

भागे हुए शत्रु हिन्दुस्तान
याद सदा रक्खेंगे।
सब जवानों के विक्रम की
युग युग प्रशस्त करेंगे।



स्वागत, युद्ध !

संग्राम द्वार पर आया स्वागत तेरा।
आगत को हमने विमुख न घर से फेरा।
हर्ष अतिथि सत्कार स्वयं करता है।
परिणाम घोर से नहीं तनिक डरता है।

यद्यपि हम संतत शान्तिवाद के हामी।
पर अत्याचार समक्ष न युद्ध विरामी।
हम ललकारों से भीत न होने वाले।
हम भारतवर्ष का दर्प कुचलने वाले।

रेशम संगीनों को सीनों पर सहना।
है खेल हमारे लिए प्राण पर बहना।
बोले गोली बम वर्षा में दृढ़ रहना।
है पाप युद्ध में मुँह से 'बस' तक कहना।

रण-भिक्षा देना धर्म हमारा प्यारा।
थी शिरपोर जिसने बढ़कर ललकारा।
दिरिन्दुओं की पग की ठोकर से ढहना।
बहते बनना नित हृदय अनु का बहना।

आओ कर लो दो हाथ न फिर पछताओ।
अब कैसा युद्ध-विराम सोच क्या आयी।
शत्रुओं का संगर रक्तरंग ही सिरता।
निर्णय-पक्ष चल पड़ा न पीछे फिरता।



स्वर्ग का आदर्श

उपचुनाव आयोजन
वर्षा से धुला
नील निर्मल गगन
अमा निशा का घोर तिमिरावरण
अर्धपारदर्शक तारों की झिलमिल आभा में
चल रहा प्रचार अभियान पथ
आकाशगंगा के उभय पुलिन पर
अमर ज्योतिपुंजों के लोक में
निर्वाचन का उत्सव
जाली मतदान विहीन
लोकतंत्री पद्धति पर
रजत रश्मियों के माध्यम से
हो रहा मत दान,
संध्या से विहान।

शुभ शान्त वातावरण
अनवरत
स्पर्धा भी सर्वाधिकार
और और कई बार
सारे उपचुनाव में परन्तु
निम्न स्तर का न यहां विचार।

अन्तरिक्ष के स्वर]

कुमसानों यों मसानों यहां
लोहिया है परन्तु वह दुर्गी वैमानी यहां।
जनविरोधी कार्यक्रमों में लगन
मिथ्याचारी कहां यहां ?

उल्कापातों के लोक में
ज्वलित चक्र
दुरभिसन्धि बिना
घूमता है सतत
लाता है
परिवर्तन विवर्तन
नवालोक
सहज सौम्य पथ से।

इतना ही अन्तर है
मर्त्य और स्वर्ग में
पृथ्वी का जीवन
बंधा है मृत्यु स्पर्श से
स्वर्ग में अमरता का
शुभावर्त रक्षित है।

इस जग में बूढा
लोकतंत्र का जो स्वर्ण रथ
पथ की बाधाएं झेलो जा रही है क्रम में
उसके हेतु प्रेरणा का पुञ्ज
कहीं और नहीं।
ऊर्ध्व दृष्टि करो
और देखो वह अपूर्व दृश्य
दिखो यहीं जायगी।

मानवता के उद्धार का पथ
होगा प्रशस्त ।
अन्तरिक्ष का वातावरण
करो धरती पर धारण ।
सत्य जीवन
असत्य मरण !



कुपसालो को मसानी नहीं
सोहिया है परन्तु यह दुनों बेमानी नहीं।
धर्मविरोधी कार्यक्रमों में मग्न
मिथ्याचारी कहाँ नहीं ?

धरकामों के लोक में
क्रान्ति चक्र
दुरभिसन्धि बिना
घूमता है सतत
लाता है
परिवर्तन विवर्तन
यथालोक
सहज सौम्य पथ से।

इतना ही अन्तर है
मर्त्य और स्वर्ग में
पृथ्वी का जीवन
बंधा है मृत्यु स्वार्थ से
स्वर्ग में अमरता का
शुभादर्श रक्षित है।

इस रस में डूबा
लोकतंत्र का जो स्वर्ण रथ
चक्र की धुराएं धंसी जा रही हैं कर्दम में
उसके हेतु प्र रक्षा का द्रव
कहीं और नहीं।
ऊर्ध्व दृष्टि करो
और देखो वह मधुर द्रव
पियो वही वारुणी।

[प्रतिवेदन के स्वर

मानवता के उद्धार का पथ
होगा प्रशस्त ।
अन्तरिक्ष का सदाचरण
करो धरती पर धारण ।
सत्य जीवन
असत्य मरण ।



िरेरन है मार]

हैमरशोल्ड !

शुभ्र-धवल सीमन्त पर सौभाग्य बिन्दु
महामानव हैमरशोल्ड !
मृत भी तुम हो अमर
सुरभित दिगन्त
यशोलोकोन्मुखात से तुम्हारी सौरभ !

विश्व जनसेवा का महान व्रत
तुमने सिखाया होम प्राण
आहुति दे किया सफल
जीवन का भव्य मिशन ।
किया विफल
विश्वशान्ति के बैरियों का
निश्चित प्रयास ।

तुम धन्य, धन्य धरा पूत
जाया तुम-सा सपूत
पुण्य स्मरण हैमरशोल्ड
धरती आकाश
अन्तरिक्ष अभियान के तुम्हारे
हैं साक्षी सभी
कुचक्रियों ने मिटा दिये हों
चाहे समस्त चिन्ह ।

सौंप दिया हो पावन रक्त
रोती बिलखती उस रजनी के प्रभात से
व्याप्त हो बिखरा यहाँ
बापूधाम तव महामना ।

मिल रहा छोर नहीं आज
उस खोजने को
कांप रहा भूल यह
दर दर की धनियाह
लांछित उपेक्षित,
निर्वासित — अपमानित आप
घटे जा रहा है तिल तिल !

कलपती नदियों से
झड़ पड़े पतित पुष्प
पद्मिनी
पुण्य लोक लोक रमणीय
केवल हो शेष तुम्हीं
देवोपम परम पुरुष !

भारती पुकारती हितबुए,
तुम्हारी भित्ति
कण कण पूजित
मनुष्यता के आंगन में
अपूर्व व्यक्तित्व वह
भारत पर शांति रश्मियों का बन रहनुमा ।

देर है अंधेर नहीं
दुनिया में,
मिलता है फल अवश्य
शुभाशुभ कर्मों का,
ईसा मर कर भी रहते अमर
जीकर भी मरणासु होते हैं निर्लेप किन्तु ।



गुटर गूँ

जोड़ा कबूतरों का
'गुटर गूँ' करता
उतर आया
घर के पिछवाड़े
बबूल की छाया तले
किरण-बंध शिथिल
चुगते मसलों का।

कला विज्ञान के किशोर छात्र
मूक साक्ष
कामिता पराजिता—
कौनसी ज़बान
महुलेबतन !
अंतर्राष्ट्रीय संघ की तो न है कदापि
प्राकृत नहीं नहीं
जर्मन फ्रेंच रशियन नहीं नहीं
पश्तो, पर्शियन अरबी नहीं नहीं
तमिल, तेलगू बंगला हिन्दी नहीं नहीं
कौन सब भाषा जिहन ?
कौन स्वर रागिनी का न
डाल पर खिलती है मुस्कान रोम रोम ?

इंप्रेशन के स्वर]

'समग्र सजोये मता
भाषा भक्तिमति मधु ?
सर्वांग पूर्ण है समर्थ
ज्ञान विज्ञान के सूक्ष्म तत्त्व
इतिहास पुराण का सत्व
इसमें प्रकट
शास्त्र ग्रंथ नहीं कोई एक
मर्म जिसका न हो सके व्यक्त
स्वराष्ट्र की सांस्कृतिक संपदा
शब्दकोष
भावों औ विचारों का
संचित है इस अमूल्य रत्नागार में ।

'तुम बेचारे
राष्ट्रचेतना विहीन
भावात्मक एकता का स्वप्न लिये डोलते
संशय की तुला पर निज भाषाओं को तोलते
आत्मविश्वासहीन
अकिंचन, भग्न, दीन
राष्ट्रभाषा की आस तुम्हें
शोभा नहीं देती बंधु !

'बीस के अन्दर' ही
जीवन का व्यापार
चलेगा कुछ ही दिन ।
होते क्यों भार परायी भाषाओं का
सदियों से मत करो बात

संस्कृति की
संस्कारों से जो ओतप्रोत
जिसमें रहते गुण-धर्म निहित
गुण-धर्म विहित जो
शाश्वत,
जो जीवन की व्याख्या
समाज का दर्पण,
जिसमें दर्पे मुखर
व्यतीत के शौर्य-पराक्रम का मापन।

दौड़ो, दौड़ो यह चर्चा
चर्चा करो
मृत्तिका के ढेलों की।
रामभूति के चरणों में
विश्राम प्राप्ति-सौभाग्य
भाग्य में नहीं तुम्हारे तात!
बस यह निश्चित।

उड़ गये कबूतर पुण्य कोश भर
नभ में दूर दूर अति दूर!
गुटरगूं पथहीन स्वर गुंजित।
मूक स्तब्ध सुपीड़न प्राण कम्पित,
विस्मित जन-मन विस्फारित नयन नयन।



प्रतिरोध के स्वर।

कैनेडी के निधन पर

कौन हत्यारा तुम्हारा
कर सका तुमको प्रहार
तुमको दुलारा विश्व का ?

चंद्रमा का अर्घ्य
श्रद्धा का कमल
स्मृति में तुम्हारी
बरसा करेंगे शत सहस्र संवत्सर !
ओ महाप्राण सौम्य कैनेडी !
लिंकन से सिद्ध हुआ जिसकी परंपरा का ।

वह अभागा तो न था ज्ञात
न अपने कुकृत्य का अनुमान
अन्यथा विश्व-सौमनस्य की हत्या का दुर्वह भार
तुम पर प्रहार कर
सहन वह करता न कदापि ।
तथ्य यह सुनिश्चित है
आज जब विश्व के महान राष्ट्र
संशय और संदेहों से कंपित
शस्त्रीकरण के बोझ से आक्रान्त
विनाश के कगार पर
विस्मित भ्रष्ट चित्त
किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े ।

मनुजता का मुखौटा
होगया उसका व्यर्थ।
मिटाने के प्रयास में
तुम्हें देगया अविनश्वरता का वरदान
उस भाग्यहीन नराधम का वज्रपात।
भावी भगवान्
ने दिये सत्यज्योति शिरोरत्नों की माला में
तुम्हें स्थापित कर होगये कृतकृत्य।

अपूर्व आश्चर्य!
ईर्ष्या व मधुरता जग में हुआ
प्रस्तुत हुआ तुम्हारे पवमान से
अस्तुत धर्मी-भाव
व्याप्त हुई एक समवेदना
शत्रु मित्र में समान!
किया मधुमोचन निर्मोचन में वसुधा के।

एक-मात्र उभय वरा
बढ़ा रहे श्रद्धा-सुमन
पुण्य स्मृति को तुम्हारी
समुदाय है प्रणत ज्योति!



कैनेडी के निधन पर

कौन हत्यारा तुम्हारा
कर गया तुमको अमर
तुमको दुलारा विश्व का ?

वंदना का अर्घ्य
श्रद्धा का नमन
स्मृति में तुम्हारी
अर्पित करेंगे शत सहस्र संवत्सर !
ओ महामानव सौम्य कैनेडी !
लिंकन से सिद्ध हुआ जिनकी परंपरा का ।

उस अभागे को न था ज्ञान,
न अपने दुष्कृत्य का अनुमान
अन्यथा विश्व-सौमनस्य की रक्षा का दुर्वह भार
तुम पर प्रहार कर
सहन वह करता न कदापि ।
तथ्य यह सुनिश्चित है
आज जब विश्व के महान राष्ट्र
संयम और तर्कों से वंचित
अस्त्रीकरण के मोह से आक्रान्त,
विनाश के कगार पर,
विस्मित भू के चित
विचारवान कर्तव्यमूढ़ खड़े ।

प्रजा का मुखौटा
होगया समरत व्यर्थ।
मिटाने के प्रयास में
तुम्हें देकर अविनश्वरता का वरदान
उस भाग्यहीन नराधम का वज्राघात।
भावी मन्वन्तर
इसी मिले सतावदीन ज्ञिरीतसों की मात्रा में
तुम्हें स्थापित कर होगये ह्तपूत।

अपूर्व प्राच्चय!
ईर्ष्या व पश्चात्ताप में हठात्
प्रस्तुत हुआ मस्तक पदनाम से
मनुज मभी भाव
स्थाप हुई एक समवेदना
प्रत्र भिन्न में नमान!
किया प्रभुमोचन द्वि-लोचन से बहुधा है।

एक-साथ उमड़ कर
बहा रहे धारा-समन
पुण्य स्मृति को तुम्हारी
धन्यवाद है सतत अंजलि।



कवि को काम्य इष्ट
काव्यालोचन की हो क्यों उसे चाह ?
सत्यबोध का पथिक
मनीषी कवि
बहुधा रहता अव्यक्त
विषय वस्तु के पीछे
पोषित भावों और विचारों की छाया में।
प्रायः सुन्दरतम पंक्तियाँ
न गाई जातीं कवि कंठों से।
वे रहतीं चिर मौन
अमुद्रित
देख न पातीं वे प्रकाश दिनमणि का।
कोलाहल साहित्य हाट का
करता उनको विवश
आत्मगोपन का अपनातीं वे मार्ग
सहज सौम्य-मधुर सत्वर।

यशकाम की धूप
छिपा लेती स्वप्निल रमणीय रूप जिनकी वे।
कवि अंधेरे में ही पाता पोषण
विस्मृति में विश्राम
अभिराम अभीप्सित।
कीर्ति कामना हो उसे क्यों
वीणावादिनि के चरणों में
जिसका आशीर्वाद समर्पित।
विजय पराजय अनपेक्षित हैं
गीतों में जीता रहता कवि।